मधुमती

ISSN : 2321-5569

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

वर्ष 61, अंक 1, जनवरी, 2021

मूल्य ₹ बीस

क्रम

संपादक की बात

विशेष स्मरण

अप्पा से मेरी मुलाक़ात कभी खत्म नहीं होती
सीमन्तिनी राघव 11

जो काग़ज पर लिखा तो झूठा लगा
बृजेश अम्बर 17

लेख

हिन्दू धर्म : एकरूपता के अग्रह, मध्यवर्ग और संस्कृतीकरण
नरेश गोस्वामी 22

राष्ट्र : स्वराज का कथात्मक कहासमर
कमलकिशोर गोयनका 33

सचमुच मैं अन्धेरे युग में जी रहा हूँ !
आशुतोष पाण्डेय 42

कामाध्यात्म और उर्वशी
हरीश अरोड़ा 53

दक्षिण भारतीय भाषाओं-साहित्य में गाँधी
बाबू राज के.नायर 59

संस्मरण

कृष्णा सोबती की जीवन कथा का सिरोही प्रसंग
नंद भारद्वाज 74

जापान में हिन्दी
ऋचा मिश्र 75

कहानी

चाबी
रूपा सिंह 88

कविताएँ

अशोक वाजपेयी 97
रंजना मिश्रा 101
अनामिका अनु 105

अनुवाद

आक्रमकता की भाषा जन-आख्यान तथा प्रजातान्त्रिक प्रतिक्रिया
मूल : गणेश देवी
अनुवाद : ज्योतिका एलहेंस 108

जापान में हिन्दी

ऋचा मिश्र

भाषा व साहित्य का सम्मान वास्तव में समाज की ऊर्जा और जीवंतता का सम्मान है। साहित्य का सृजन-शिक्षण और अध्ययन - अध्यापन उसी सामाजिक परिवेश में हो सकता है, जहाँ बौद्धिक विकास के अनुकूल और स्वस्थ अवसर उपलब्ध हों । इस पृष्ठभूमि में जापान के *तोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय* के हिंदी विभाग को भारत सरकार द्वारा मिलने वाला *विश्व सम्मान* विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। 18 से 20 अगस्त 2018 तक मॉरीशस में आयोजित ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन में तोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय में हिन्दी शिक्षण की सुदीर्घ परंपरा को गौरवान्वित करते हुए विश्व सम्मान से सम्मानित किया गया। यह निश्चित ही इस विश्वविद्यालय के लिए ही नहीं अपितु विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों के लिए गर्व का विषय है।

तोक्यों विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय ने हिंदी की शिक्षण प्रणाली को संपुष्ट बनाने में मात्र पाठ्यपुस्तक निर्माण और अनुवाद ग्रंथों द्वारा ही सहयोग नहीं दिया, अपितु आधुनिक शिक्षण की बदलती चुनौतियों, आवश्यकताओं तथा विद्यार्थियों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, दृश्य श्रव्य माध्यम की एक पृथक व्यवस्था भी की, जहाँ हिन्दी के विद्यार्थी हिन्दी फिल्मों, टेलिविजन सीरियल इत्यादि के द्वारा भाषा के विभिन्न प्रायोगिक रूपों से परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

संस्थागत और व्यक्तिगत दोनों श्रेणियों में तोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय को यह सम्मान मिला, यह दोहरे हर्ष का विषय है। हिंदी अध्ययन और अध्यापन के 100 से अधिक वर्ष पूर्ण कर चुके इस विद्यालय ने कई मील के पत्थर पार किए हैं। सन 1908 से हिंदी उर्दू मिश्रित *हिंदुस्तानी* के शिक्षण का प्रारंभ करने वाले इस विश्वविद्यालय में आज हिंदी के अतिरिक्त मलयालम, बांग्ला तथा उर्दू के शिक्षण की सम्यक् व्यवस्था है।

प्रसिद्ध हिंदी विद्वान तथा भारतीय मनीषा के अद्भुत चितेरे स्वर्गीय श्री विद्यानिवास मिश्र ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक *हिंदी और हम* में हिंदी भाषा की जिस विशेष वृत्ति को उकेरते हुए कहा था कि *प्रत्येक भाषा का अपना संस्कार होता है। हिंदी का संस्कार सबको सहभागी मानने का है। इसको बोलने वालों में यह बोध कहीं गहरे विद्यमान है कि वह जीवन बड़े पुण्य का है, जिसमें मनुष्य अपने समाज के लिए कुछ कर सके। सच्ची शिक्षा इसी संकल्प को मात्र धनार्जन की ओर न मोड़ कर सेवार्जन के लिए मोड़ती है।* वही समन्वयात्मक वृत्ति प्रारंभ से ही जापान के सभी हिन्दी विद्वानों, शिक्षकों तथा रचनाकारों में मिलती रही है। प्रोफेसर क्यूया दोई, प्रोफेसर रेइचि गामो, प्रोफेसर तोशिओ तनाका, प्रोफेसर कजुहिको मचिदा तथा ताकेशि फुजिई जैसे शिक्षकों ने भारत जाकर हिंदी की शिक्षा ग्रहण कर, वापस जापान